गाजर

गाजर भारतवर्ष की प्रमुख जड़ वाली फसल है। गाजर में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में होता है। इसके अलावा इसमे शर्करा, खनिज, लवण थायोमिन तथा राइबोफ्लेविन विटामिन भी होता है। गाजर को सलाद के रूप में भी खाया जाता है तथा इसके सब्जी, अचार, ज्यूस, मुरब्बा, मिठाइयां आदि व्यंजन बनाये जाते है।

जलवायु : यह एक सर्दी वाली फसल है। इसके बीज अंकुरण के लिए 7.2 –23.9 डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम तथा जड़ों की अच्छी वृद्धि के लिए 18–23 डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है। (जड़ों के अच्छे रंग के लिए 15–21 डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है।) गाजर के रंग तथा आकार पर तापक्रम का बड़ा असर पड़ता है। बहुत ही ठण्डे तापक्रम में गाजर का रंग बहुत ही फीका एवं लम्बाई बढ़ जाती है। इस प्रकार बहुत गर्म तापमान में रंग कुछ हल और लम्बाई कम हो जाती है। अच्छे रंग और अच्छे आकार के लिए 15 डिग्री सेन्टीग्रेड से 21 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान उपयुक्त रहता है।

उन्नत किस्मे : पूसा रूधिरा (2008)

पूसा रूधिरा (2008) : भारतीय कृषि अनुसंधान पूसा, नई दिल्ली द्वारा विकसित गाजर की यह किस्म मध्य सितम्बर से अक्टूबर में बुवाई हेतु उपयुक्त है। इस किस्म की गाजर लाल रंग के पित वाली, मध्यम लम्बाई की तथा त्रिकोण आकारनुमा होती है। यह किस्म दिसम्बर माह से पकना शुरू हो जाती है तथा औसत उपज 30 टन प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो जाती है।

पूसा वृष्ठि (2009) – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से विकसित यह किस्म अगेती बुवाई (जुलाई) के लिए उपयुक्त है। इस किस्म की पकाव अवधि 80–90 दिन तथा उपज क्षमता 250 क्विंटल तक प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म उष्ण सहनशील है।

भूमि का चुनाव व उसकी तैयारी : गाजर की अच्छी पैदावार के लिए गहरी, भुरभुरी हल्की दोमट तथा अच्छे जल निकास वाली मिटटी उपयुक्त रहती है। भूमि का पी.एच. मान 6.0 से 7.0 उत्तम समझा जाता है। भूमि की तैयारी के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। बाद में 5–6 जुताई देशी हल से या हैरो से करें। भूमि को समतल बनाने के लिए आवश्यकतानुसार पाटा भी चलायें। खेत की तैयारी के लिए अच्छी सड़ी हुई 250 क्विटल गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर मिलायें।

खाद एवं उर्वरक : गोबर की खाद के अलावा 60 किलो नत्रजन 40 किलो फास्फोरस तथा 120 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर देवें। इसमें से नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा खेत की अन्तिम तैयारी के समय डाल देवें। शेष बची हुई नत्रजन की मात्रा बुवाई के 45 दिन बाद खड़ी फसल में देवें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई : गाजर का 5 से 6 किलो बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त रहता है। बीज की बुवाई मेड़ो पर या समतल भूमि पर की जाती है। गाजर की बुवाई अगस्त से नवम्बर तक की जाती है। देशी गाजर अगस्त से सितम्बर तक तथा अन्य नारंगी रंग की उन्नत किस्में अक्टूबर से नवम्बर तक बोई जाती है। कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 8 से 10 सेन्टीमीटर रखें। बीज एक से 1.5 सेन्टीमीटर गहरा बोयें।

सिचाई एवं निराई गुडाई : पहली सिचाई बोने के तुरन्त बाद कर देवें तथा बीज उगने तक भूमि मे नमी बराबर बनाये रखें। गाजर के बीज को उगने में 8 से 10 दिन लगते है। बीज उगने के बाद जब आवश्यक हो तो पौधों में खरपतवार नहीं पनपने देवें।

व्याधियां

पत्ती धब्बा–गाजर की पत्तियों पर गोलाकार पीले धब्बे पड़ जाते हैं। व

बाद में इनका रंग भूरा पड़ जाता है। इसकी वजह से पत्तियां झुलस जाती हैं।

नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से आवश्यकतानुसार छिड़कें।

छाछ्या – इस रोग के शुरु में सफेद चूर्ण जैसे छोटे–छोटे धब्बे पत्तियों एवं तने का सारा भाग ढक लेते हैं।

नियन्त्रण हेतु डाइनोकेप एल सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

खुदाई – गाजर की खुदाई करने से पहले हल्की सिंचाई कर देवें। जिससे बुवाई करने मे आसानी रहे। जब गाजर पूर्ण विकसित हो जावे तब उन्हें खोद लेवें।

गाजर की जड़े 60 से 85 दिन मे खुदाई योग्य हो जाती है। खुदाई में देरी करने से गाजर की जड़े शीर्ष से विभाजित हो जाती है। तथा खाने योग्य नहीं रहती है।

उपज : गाजर की पैदावार 250 से 300 क्विटल प्रति हेक्टेयर होती है। विलायती किस्मों की उपज 100 से 150 क्विटल प्रति हेक्टेयर होती है।

फसल चक्र अपनाकर

भूमि का स्वास्थ्य बचायें